Dr. Sarita Devi
Assistant Professor
Department of Psychology
M.B.R.R.V.Pd. Singh College, Ara

सामाजिक प्रत्यक्षण: प्रत्यक्षणीय रक्षा (Social Perception: Perceptual Defence)

1. **प्रस्तावना**

   - सामाजिक प्रत्यक्षण (Social Perception) वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति अन्य व्यक्तियों के व्यवहार, भाव-भंगिमा, उद्देश्यों एवं व्यक्तित्व का अर्थ निकालता है। इस क्षेत्र में व्यक्ति की पूर्व धारणाएँ, भावनाएँ, अभिप्रेरणाएँ तथा अचेतन मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाएँ महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।
   - इसी संदर्भ में प्रत्यक्षणीय रक्षा (Perceptual Defence) एक महत्वपूर्ण अवधारणा है, जो बताती है कि व्यक्ति ऐसी सूचनाओं को देखने या स्वीकार करने से बचता है जो उसकी आत्म-छवि, मूल्यों या भावनात्मक सुरक्षा के लिए खतरा उत्पन्न करती हैं।

2. **प्रत्यक्षणीय रक्षा की संकल्पना**

   - प्रत्यक्षणीय रक्षा वह मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति अप्रिय, भयावह या आत्म-सम्मान के लिए खतरनाक उद्दीपनों (stimuli) को या तो अनदेखा करता है, या विकृत रूप में ग्रहण करता है।
   - यह प्रक्रिया मुख्यतः अचेतन स्तर पर कार्य करती है और व्यक्ति को मानसिक तनाव (Anxiety) से बचाने का प्रयास करती है।
   - इस अवधारणा का संबंध मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत से भी है, विशेषकर Sigmund Freud के रक्षा-तंत्र (Defense Mechanisms) से।

3. **प्रत्यक्षणीय रक्षा का ऐतिहासिक विकास**

   (A) मनोविश्लेषणात्मक पृष्ठभूमि

   - फ्रायड के अनुसार, व्यक्ति का अहं (Ego) बाहरी एवं आंतरिक खतरों से स्वयं की रक्षा करता है।
   - प्रत्यक्षणीय रक्षा को अहं की एक रक्षा-प्रक्रिया माना गया है।

Edit with WPS Office

(B) प्रयोगात्मक अध्ययन

- प्रत्यक्षणीय रक्षा पर महत्वपूर्ण प्रयोग Jerome Bruner और Leo Postman द्वारा किए गए।
- उन्होंने पाया कि अपशब्द (taboo words) या भावनात्मक रूप से उत्तेजक शब्दों को पहचानने में अधिक समय लगता है।
- व्यक्ति इन शब्दों को गलत पढ़ता है या पहचानने में विलंब करता है।
- इससे यह सिद्ध हुआ कि व्यक्ति भावनात्मक रूप से खतरे वाली सूचनाओं से बचने की प्रवृत्ति रखता है।

4. **प्रत्यक्षणीय रक्षा की विशेषताएँ**
   - चयनात्मक ध्यान (Selective Attention) – व्यक्ति केवल सुरक्षित या अनुकूल सूचनाओं पर ध्यान देता है।
   - विकृति (Distortion) – अप्रिय सूचना को परिवर्तित करके ग्रहण करना।
   - अस्वीकार (Denial) – स्पष्ट प्रमाण के बावजूद सूचना को नकार देना।
   - विलंब (Recognition Threshold Increase) – भावनात्मक शब्दों की पहचान में अधिक समय लगना।

5. **प्रत्यक्षणीय रक्षा की प्रक्रिया**
   - उद्दीपन (Stimulus) प्रस्तुत होता है।
   - यदि उद्दीपन आत्म-सम्मान या विश्वास के लिए खतरा है, तो चिंता उत्पन्न होती है।
   - अहं रक्षा-तंत्र सक्रिय करता है।
   - सूचना को विकृत, अस्वीकार या अनदेखा किया जाता है।

6. **उदाहरण**
   - यदि कोई व्यक्ति स्वयं को ईमानदार मानता है और कोई उसे बेईमान कहे, तो वह उस सूचना को अनदेखा कर सकता है।
   - परीक्षा में असफल छात्र परिणाम को “गलत जाँच” कहकर अस्वीकार कर सकता है।

Edit with WPS Office

7. **सामाजिक प्रत्यक्षण में भूमिका**

- प्रत्यक्षणीय रक्षा सामाजिक संबंधों को प्रभावित करती है:
- पूर्वाग्रह (Prejudice) को बनाए रखती है।
- आत्म-धारणा (Self-concept) की रक्षा करती है।
- आलोचना को स्वीकार करने में बाधा बनती है।

8. **संबंधित अवधारणाएँ**

अवधारणा	संक्षिप्त विवरण
चयनात्मक प्रत्यक्षण	केवल अनुकूल सूचनाओं को ग्रहण करना
संज्ञानात्मक असंगति (Cognitive Dissonance)	विरोधाभासी जानकारी से मानसिक असुविधा
रक्षा-तंत्र	अहं की सुरक्षा हेतु मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाएँ

9. **आलोचना**

- सभी प्रयोगों में प्रत्यक्षणीय रक्षा का स्पष्ट प्रमाण नहीं मिला।
- कुछ शोधकर्ताओं के अनुसार, यह केवल ध्यान (Attention) का प्रभाव हो सकता है।
- सांस्कृतिक भिन्नताएँ भी परिणामों को प्रभावित करती हैं।

10. **शैक्षिक एवं व्यावहारिक महत्व**

- परामर्श (Counseling) में क्लाइंट की प्रतिरोधात्मक प्रवृत्तियों को समझने में सहायक।
- सामाजिक संघर्षों को समझने में उपयोगी।
- आत्म-विकास के लिए आत्म-जागरूकता आवश्यक।

Edit with WPS Office

11. निष्कर्ष

- प्रत्यक्षणीय रक्षा सामाजिक प्रत्यक्षण की एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है, जो व्यक्ति को मानसिक तनाव से बचाने का प्रयास करती है। हालांकि यह अल्पकालिक सुरक्षा प्रदान करती है, परंतु दीर्घकाल में यथार्थ से दूरी एवं पूर्वाग्रह को बढ़ावा दे सकती है।
- इसलिए सामाजिक मनोविज्ञान में प्रत्यक्षणीय रक्षा का अध्ययन व्यक्ति के व्यवहार, दृष्टिकोण और सामाजिक अंतःक्रियाओं को समझने के लिए अत्यंत आवश्यक है।

Edit with WPS Office